

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल मु.उ.पु. 24 पृष्ठ
कार्यालयीन उपयोग के लिए निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।



परीक्षा के नाम
की सील

परीक्षा का विषय हिन्दी
परीक्षा की दिनांक 20-03-09

1. विषय कोड 051

परीक्षा का विषय हिन्दी
परीक्षा की दिनांक 20-03-09

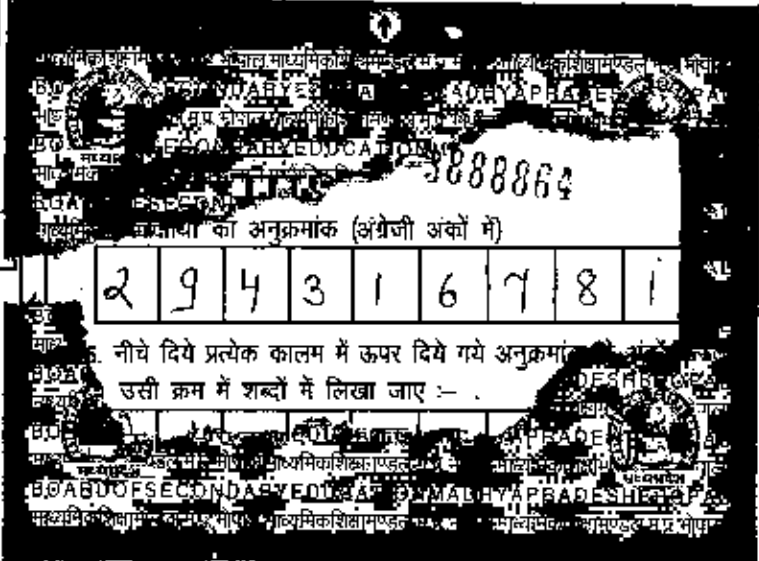
2. परीक्षा का माध्यम English
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः करें कोड सेट U-2002

केन्द्र क्रमांक की सील
केन्द्राध्यक्ष
हार्ड स्कूल / हायर सेकेण्डरी
केन्द्राध्यक्ष क्रमांक 131022

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में X अंकों में X
ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक D5 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।



B
S
E
M
P

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

नाम चेतना दत्त पद अध्यापक
पता/संस्था म.गो.बा. उ.उ.मा.वि.जवरा
परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक	प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक	प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक
1	3		11	10		21	18	
2	3		12	11		22		
3	4		13	12		23		
4	5		14	12		24		
5	5		15	13		25		
6	6		16	13		26		
7	7		17	14		27		
8	8		18	15		28		
9	8		19	16		29		
10	9		20	17		30		
कुल प्राप्तांक			शब्दों में			अंकों में		

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या... प्रश्नों के उत्तरों का गहन मूल्यांकन किया है। उत्तर पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कवर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक)

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 973032-y

दिनांक.....

दिनांक.....

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ
3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कच्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 3 के अंक

कुल अंक

Q. 1.

(i)

अं.

कृष्ण

(ii)

अं.

गुनाबराथ

(iii)

अं.

बात ही बड़ी

B

S

(iv)

अं.

भारतेन्दु युग के

E

M

(v)

अं.

चार

D

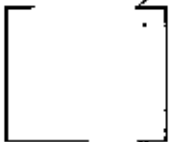
Q. 2.

(i)

अं.

जब बरामदे और शम्भुनागर का फर्श लूँठ गया

(ii)



ईश्वर की ओर

पृष्ठ के अंक 0. 10

(iii)

अं.

रूपक



(iv)
30.

गौपाल सिंह 'नेपाली'

(v)
30.

कर्मचार्य

Q-3.

(i)
30.

सत्य

B
S
E
M
P

(ii)
30.

सत्य

(iii)
30.

असत्य

(iv)
30.

असत्य

(v)
30.

असत्य





- Q. 4.
- (i) यशोधरा ने बसंत कहा है - सिद्धार्थ को
- (ii) कन्याकुमारी नाम पड़ा है - प्रवर्ति के नाम पर
- (iii) कुमारी की तुलना में गरीबी अधिक सुखद है - महात्मा गाँधी
- (iv) अम्बुज - कमल
- (v) गीमसाइले - पृथ्वी और आग्नि

B
S
E
M
P

- (i) अवर्षा की स्थिति के कारण त्राहि-त्राहि मची हुई थी।
- (ii) सिरचन अपने हाथों से बनी हुई चीजों को मानव को देने के लिए स्टेशन गया था।
- (iii) बिन पानी के आटा, मीठी और मनुष्य महत्वहीन हो जाते हैं।

(iv) यशोधरा राजकुमार सिद्धार्थ की पत्नी थी।

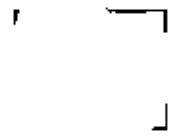
(v) हंसिनी ने राज-कृष्ण पूजा को सौंपने का सुझाव दिया।

6



योग पूर्व पृष्ठ

+



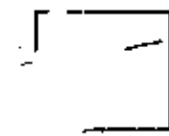
पृष्ठ 5

=

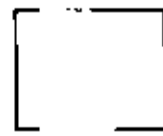
Q.6.
उ०.

यशोदा ने देवकी को संदेश भेजा कि मैं तो कृष्ण की पालन-पोषण करने वाली धार्य हूँ। मैं तुमसे विनती करती हूँ कि तुम श्री कृष्ण के प्रति ममता का व्यवहार करना उसके प्रति कठोरता का व्यवहार मत करना। श्री कृष्ण को प्रातः काल मारवन रोटी ही अच्छी लगती है इसलिए उसे मारवन रोटी ही देना। तुम श्री कृष्ण की सभी फरमाइशों को पूरा करके उसके सभी नखरे उठाकर उसे स्नान के लिए मजाना तभी वह गरम पानी तेल और उबटन से स्नान करेगा। यशोदा ने देवकी को यह संदेश उसके मित्र उद्वेग के साथ भेजा और कहा कि तुम श्री कृष्ण की सभी फरमाइशों को पूरा करना। श्री कृष्ण बहुत ही संकोची स्वभाव के हैं अतः तुम ही उसकी रूचियों और आदतों का ध्यान रखना होगा।

7



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पूरु के अंक

कुल अंक


 प्र. 7.
30.

 B
S
E
M
P

शक्तिशाली और सशक्त व्यक्ति यदि बल का सदुपयोग करे तो सफलता उनके कदम चूमती हैं। उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है और उन्हें पराजय का मुँह नहीं देखना पड़ता। राम और कृष्ण इनके उदाहरण हैं। इन्होंने बल का सदुपयोग किया इसलिए इनकी जयंती मनाई जाती है जबकि रावण और कंस ने बल का दुरुपयोग किया यही कारण है उनके स्मरण मात्र से ही मन में घृणा उत्पन्न होने लगती है। सात्विक सहयोग और राष्ट्रों के निर्माण के लिए बल बहुत अधिक उपयोगी है। बल कौशल और बुद्धि कौशल में भी पारस्परिक संबंध है। बल कौशल के बिना बुद्धि कौशल और बुद्धि कौशल के बिना बल कौशल व्यर्थ है। उदाहरण- राजदूतों में बल था परंतु बुद्धि कौशल का अभाव था। यही कारण है कि इतनी वीरता दिखाने के बाद भी वे पराजित हुए। यदि उनमें बल के साथ बुद्धि कौशल भी होता तो आज उनका इतिहास कुछ और ही होता। बल दो प्रकार के होते हैं। आत्मबल और शारीरिक बल। भारत में विकास के लिए आत्मबल को अधिक महत्व दिया जाता है।



Q.8
उ०

आर्यभट्ट ने हमें बताया कि पृथ्वी सूरज के चारों ओर घूमती है। उन्होंने रेखागणित के क्षेत्र में वृत्त के परिनिधी और व्यास के उपासक पाई को परिभाषित किया है। बौद्ध जागरण की प्रक्रिया में अनेक लोगों का योगदान है जैसे धार्मिक संतों वैज्ञानिकों कवियों दार्शनिकों गणितज्ञों और खगोलविदों आदि। भारत जब बौद्ध समाज के रूप में परिवर्तित होगा तभी वह उन्नति करेगा। भारत के विकास के लिए पंचवर्षीय योजना बनाई गई। आर्यभट्ट ने दशमलव के चार अंकों तक उसका शुद्ध मान बतलाया है। दशमलव पद्धति भी आर्यभट्ट की ही देन है।

B
S
E
M
I

Q.9
उ०

गाँधीजी का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण था कि ऐसी शिक्षा जिससे चरित्र निर्माण और कर्तव्य बोध ही बढी सही शिक्षा है। केवल अक्षर ज्ञान शिक्षा नहीं है। सच्ची शिक्षा तो चरित्र निर्माण और कर्तव्य बोध में है। गाँधीजी के अनुसार माँ की सेवा ही सच्ची



शिक्षा है। यहाँ तुम्हारा कर्तव्य है। गाँधीजी आधी शिक्षा अक्षर ज्ञान को कहते हैं। उनके अनुसार केवल अक्षर ज्ञान होना या प्राप्त करना शिक्षा नहीं है। गाँधीजी उच्चरित शिक्षा से सहमत नहीं थे। उनका मानना था कि जिस शिक्षा से व्यक्ति का चरित निर्माण हो वही सर्वश्रेष्ठ शिक्षा है। उनका मानना था कि शिक्षा के दो मूल उद्देश्य होना चाहिये। पहला यह कि व्यक्ति अपनी कमाई से ही अपनी फीस चुका सके और दूसरी यह कि व्यक्ति का शिक्षा से व्यक्तिगत निखरना चाहिये। ऐसी शिक्षा जो केवल अक्षर ज्ञान कराती हो और चरित निर्माण और कर्तव्य बोध की भावना उत्पन्न न हो आधी शिक्षा है।

B
S
E
M
P

प्र.10
उ०.

'पुरतक' नामक निबंध में जालंदा विश्वविद्यालय की यह विशेषता बताई है कि जालंदा विश्व-विद्यालय में पुरतकालय का एक विशिष्ट क्षेत्र है। उस क्षेत्र को धर्मगंज कहते थे। इस विश्वविद्यालय में रत्नसागर, रत्नोदधि, और रत्नरंजक नाम के तीन पुरतकालय थे। रत्नसागर पुरतकालय में नौ मंजिला भवन था। खिजनी बरिक्तथार के आगे लगाने से ये पुरतकालय जल कर नष्ट

10

37

योग पूर्व पृष्ठ

4

पृष्ठ 10 के अंक

41

कुल अंक



हो गए। शिक्षा का अपार अंडार आगिन कांड में जलकर अस्म हो गया। पुस्तकों के जलने के कारण देश को सबसे बड़ी क्षति पहुँचती है। देश का अपार अंडार जलकर नष्ट हो जाता है। प्रत्येक ग्रंथ रचनाकारों और कवियों की साधना का प्रतिफल होता है। सभी रचनाकारों का प्रयास और परिश्रम नष्ट हो जाता है। पुस्तकें भी कई राइयंतों का शिकार होती हैं। इसलिए कुछ पुस्तकें प्रतिबंधित कर दी जाती हैं, कुछ पुस्तकें तिरस्कृत कर दी जाती हैं और कुछ विशेष लेखकों की पुस्तकें जला दी जाती हैं। नालंदा विश्वविद्यालय के जलने से देश को सबसे बड़ी हानि हुई।

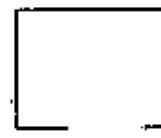
Q. 11
उ०.

विदेशियों द्वारा हमारी परंपरा और उपलब्धियों को अपना कहकर प्रचारित करने के संदर्भ में कवि ने "उल्टे वास बरैली" कहा है। विदेशी जीवन शैली में हम अपनी ही वस्तुओं को आयायित समझकर आधुनिक होने की दुंदभी बना रहे हैं। हम अपनी ही संस्कृति के

11



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 11 क अंक

कुल अंक

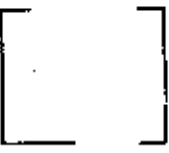


रहस्य जानने के लिए विदेश जा रहे हैं।
कवि ने यह कहा है कि हमारी भारतीय संस्कृति,
भाषा परंपरा उपलब्धियां सर्वश्रेष्ठ हैं। हमें
विदेशी जीवन शैली और पाश्चात्य वस्तुएं नहीं
अपनाना चाहिये। हमें अपने देश में ही
रहकर देश की उन्नति और प्रगति में सहयोग
करना चाहिये। इसी में हमारा कल्याण होगा।

B
S
E
M
P

Q. 12
30
1
2

द्विवेदी युग के निबन्धकारों के निम्न नाम हैं :-
कन्हैयालाल मिश्र — बाँस की लकड़ी
अंगद का पेड़
फणीश्वरनाथ रेणु — सौदागर, तीर्थयात्रा



पृष्ठ नं. अंक

P.T.O



प्र. 13.

(अ)

(क)

फूट - फूटकर रोना - बिनाख कर रोना
वाक्य :- राम ने जैसे ही अपनी माँ
की मरने की खबर सुनी वह फूट-
फूटकर रोने लगा।

(ग)

हँसी - खेल न होना - असाधारण होना
वाक्य :- पाँचवीं मंजिल से धुलौंग
लगाया कोई हँसी खेल की बात नहीं है।

B
S
E
M
P

प्र. 14.

(अ)

(ख)

सूत - वह लड़का गोपाल का सूत है।
सूत - गाँधीजी जेल में सूत काटने का
काम करते थे।

(ग)

जाति - वह लड़का उच्च जाति का नहीं
है।

जाती - रीना स्कूल से घर चली
जाती है।



पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर: (क)

(ग)

आप चुप ~~रहो~~ रहो।
परिश्रम करने से तुम परीक्षा में सफल
हो जाओगे।



Q. 15. आशा से आकाश थमा है।
 (i) लोगों में यह कहावत प्रचलित है कि -
 30. 'उम्मीद पर दुनिया कायम है।' उम्मीद से
 बढ़कर इस दुनिया में कोई चीज नहीं होती।
 आशा रखने से असफल कार्य भी सफल हो
 जाते हैं। इस दुनिया में कोई चीज नामुमकिन
 नहीं है। यदि हम प्रयास करें और भगवान पर
 विश्वास रखें तो हमें सफलता जरूर मिलेगी।
 सफलता हमारे कदम जरूर चूमेंगी। यदि हम
 किसी बात की असफलता से टूट चुके हैं तो
 उम्मीद की एक किरण हमें नई जिंदगी देती है।
 हम में नई उमंग और नई शक्ति पैदा
 करती है। हम में आत्मविश्वास जगाती है। ताकि
 हम अपने कार्य को पूरे शौर्य के साथ कर
 सकें।

Q. 16. विश्व एक - - - - - वास्तविक इंजन है।
 30. संदर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक
 के पाठ "मेरे सपनों का भारत" से ली
 गई हैं। इसके रचयिता ए.पी.जे. अबुल कलाम
 हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने
 देश की उन्नति और शक्ति के लिए क्या
 करना चाहिये यह बताया है।



B
S
E
M
I

व्याख्या :- आज भारत बौद्धिक समाज में परिवर्तित हो रहा है। देश की उन्नति भी इसी पर निर्भर है। यदि हमारा देश उन्नति करेगा तो ज्ञान और धन दोनों ही अधिक होंगे और लोगों का रहन-सहन स्तर भी बढ़ेगा और ज्ञानस्तर भी बढ़ेगा। परंतु इसके लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि हम देश की उन्नति में कहां तक और किस स्तर तक पहुंचे हैं। बौद्धिक समाज में परिवर्तित होकर ही भारत उन्नति के मार्ग पर चल सकता है और प्रगति कर सकता है। यही सही समय है जब भारत अपने आप को एक विकसित देश में परिवर्तित करे और प्रगति करे।

Q. 17.
30.

जैसा यह अटल ----- ही नाता है ॥

संदर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक की कविता 'हिमालय और हम' से ली गई हैं। इसके रचयिता गोपाल सिंह 'नेपाली' हैं।

पृष्ठ नंबर

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने हिमालय और भारतवासी के बीच में जो संबंध है, उसके बारे में बताया है।



B
S
E
M
P

व्याख्या :- लेखक कहते हैं कि जिस प्रकार हिमालय पर्वत अटल, अडिग और अविचल है उसी प्रकार भारतवासी भी अपने निश्चय पर अटल और अविचल रहते हैं। जिस प्रकार हिमालय में तूफानों से लड़ने की शक्ति है तो यह शक्ति भारतवासी में भी है। यदि हिमालय पर्वत अमर है तो भारतवासी भी अमर हैं। जब तक हिमालय का अस्तित्व धरती पर है तब भारतवासी का अस्तित्व कोई खत्म नहीं कर सकता। जब तक हिमालय नष्ट नहीं होता तब तक भारतवासी को कोई नष्ट नहीं कर सकता। भारतवासी किसी भी तूफान से नहीं डरते लेकिन कभी किसी को दुख नहीं देते। जो इस धरती पर बह रही गंगा का जल पी ले वह सभी दुखों से दूर हो जाता है। हिमालय पर्वत और भारतवासी के बीच बस ऐसा ही नाता है।

Q. 18.

(क)

पुस्तक पंक्तियों में यह बताया गया है कि वर्षा ऋतु आने से सभी वन-उपवन लहलहा उठते हैं। सभी ओर प्राकृतिक सौंदर्य बिखरने लगता है। चारों ओर हरियाली छा जाती है। और वर्षा के कारण आनंद से नाच उठते हैं। इस सुंदर दृश्य को नभ से धनधोर धटाए देखती हैं।

P.T.A



(ख)

उ०.

उक्त पंक्तियों में "वर्षा ऋतु" का वर्णन हुआ है।

(ग)

उ०.

उक्त पंसाश का उचित शीर्षक है - ~~वर्षा~~
"वर्षा ऋतु"

B Q. 19.

S उ०.

E (क)
उ०.

उक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है - "राष्ट्रीय चरित्र"

M

P (ख)
उ०.

क्रियान्वयन :- कार्य करने ~~का~~ में
राष्ट्रीय चरित्र :- देश के लोगों का चरित्र

(ग)

उ०.

सारांश :- राष्ट्रीय चरित्र ही देश के विकास का आधार है। राष्ट्रवासियों के चरित्र पर ही उस देश की उन्नति निर्भर करती है। प्रजातन्त्र के लिए भी राष्ट्रीय चरित्र बहुत आवश्यक है। राष्ट्रीय चरित्र से ही राष्ट्र का गौरव बढ़ेगा। आज चरित्र के नाम पर हमारे देश का चरित्र और



मस्तक सबसे ऊंचा है।

Q. 20.
35

93, खतरी पुरा
जावरा

दिनांक - 20-03-09

परम पूज्य पिताजी

सादर चरण स्पर्श

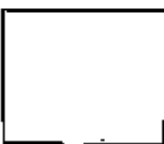
मैं यहाँ कुशल हूँ

और आशा करती हूँ कि आप भी वहाँ कुशल होंगे। आपके शुभ आशीर्वाद से मेरी पढ़ाई अच्छी चल रही है। मैं प्रातः काल जल्दी उठकर अपने निवृत्त कम से निपटकर अध्ययन करने लगती हूँ। मैं प्रतिदिन छः से सात घंटे पढ़ाई करती हूँ। आपकी बताई हुई बातों का ध्यान मैं स्वतः ही अपने गणित और विज्ञान की विशेष तैयारी कर ली हूँ। आप मेरे विषय में चिंतित न हों। मैं पूरी कोशिश करूँगी कि मैं अपनी कक्षा में प्रथम आऊँ और आपका सिर गर्व से ऊंचा करूँ।

माताजी को चरण स्पर्श एवं छोटी को प्यार।

आपकी बेटी

क. ख. श.



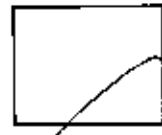
B
S
E
M
P

18



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 18 के अंक

=



कुल अंक



Q.21.

उ०.

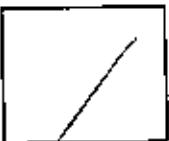
विज्ञान एवं कम्प्यूटर

प्रस्तावना :- विज्ञान ज्ञान है। और ज्ञान का कोई अंत नहीं होता। आज का युग विज्ञान का युग है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नए-नए आविष्कार कर रहा है। मनुष्य की मूलबुद्ध आवश्यकताएँ रोटी, कपड़ा और मकान हैं। मनुष्य अपनी इन्हीं आवश्यकताओं के लिए नए-नए आविष्कार कर रहा है। विज्ञान ने मानव को पक्षियों जैसे आसमान में उड़ने की शक्ति प्रदान की है। अंधे को आँखें बंद होने को कान और अंगुली को पैर दिए हैं। आज विज्ञान ने मानव को असंभव सुविधाएँ प्रदान की हैं।

2.

विज्ञान एवं कम्प्यूटर :- विज्ञान ने कई क्षेत्रों में अपना योगदान दिया है। उनमें से एक है कम्प्यूटर। आज मानव ने कम्प्यूटर बनाया है तो सिर्फ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए।

कम्प्यूटर द्वारा घंटों के काम कुछ मिनटों में कर लिए जाते हैं जिससे मनुष्य को आरामतलब बना दिया है। कम्प्यूटर के द्वारा कई बड़े-बड़े एकाउंट्स कुछ ही देर में बना लिए जाते हैं।



पृष्ठ के अंकों का योग



B
S
E
M
P

(1)

कम्प्यूटर निम्न क्षेत्रों में अत्यधिक महत्वपूर्ण है :-
यातायात के क्षेत्र में :- कम्प्यूटर ने यातायात के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान दिया है। आज कम्प्यूटर के द्वारा किसी भी प्रकार की टिकट चाहे रेलवे हो या हवाई जहाज की आसानी से कराई जा सकती है। मनुष्य घर बैठ कर ही इन्टरनेट द्वारा टिकट करा सकता है। कम्प्यूटर ने मानव को असमंजस्य सुविधा उपलब्ध की है।

(2)

चिकित्सा के क्षेत्र में :- कम्प्यूटर ने चिकित्सा के क्षेत्र में भी कोई कम योगदान नहीं दिया है। कम्प्यूटर द्वारा मनुष्य के भीतरी अंग की बीमारी तक का पता लगाया जा सकता है। और आसानी से कुछ ही समय में रिपोर्ट तैयार कर दी जाती है। आज विज्ञान ने मृत्युदर को घटा दिया है।

(3)

शिक्षा के क्षेत्र में :- कम्प्यूटर ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ही उत्पन्न कर दी है। आजकल कम्प्यूटर द्वारा एक ही विषय पर हजारों पुस्तकें तैयार कर ली जाती हैं। अनेक विषयों पर अनेक प्रकार सी.डी भी उपलब्ध हैं जिससे कौन से कौन विषयों पर पढ़ाई की जा सकती है।

(4)

संचार के क्षेत्र में :- आज कम्प्यूटर के द्वारा लोग अपनी आवाज के साथ-साथ तस्वीर भी दूसरे देश या दुनिया की किसी भी कोने तक पहुँचा सकते हैं। चाँद और भंगल गृह के संदेश भी आसानी से धरती पर सुने जा सकते हैं।



(5) कार्यालय के क्षेत्र में - कम्प्यूटर ने कार्यालय के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान दिया है। हजारों मजदूरों की तन्त्रवाह का संक्षिप्तकरण आसानी से कम्प्यूटर द्वारा रखा जा सकता है।

3. दुष्ट परिणाम :- विज्ञान और कम्प्यूटर ने जहां मानव को असमंजसग सुविधा उपलब्ध कराई है वहां इसके कुछ दुष्ट परिणाम भी हैं। हजारों मजदूरों के कार्य को मशीनों द्वारा करने से बेरोजगारी बढ़ गई है। आज मानव केवल बाहरी रूप से सुखी है मगर अंदर से उसका मन बहुत दुखी है। आज मनुष्य की अहंता का स्थान तर्क ने ले लिया है। मनुष्य की आस्था गिरती चली जा रही है। मनुष्य के कार्य मशीनों द्वारा करने से मनुष्य आलसी और आरामतलब हो गया है। विज्ञान ने मानव जीवन पर गहरा प्रभाव डाला है।

4.

उपसंहार :- विज्ञान मानव के हाथ में अद्वितीय शक्ति है। वह चाहे तो इसका उपयोग कल्याण के लिए करे या विनाश के लिए। यदि विज्ञान का उपयोग मनुष्य कल्याण के लिए तो हम

21

योग पूर्व पृष्ठ

+

पृष्ठ 21 के अंक

कुल अंक



अपने देश को स्वर्ग बना सकते हैं। इसी से हमारा
और हमारे देश का कल्याण होगा।

प्र. 13.
(ब)

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :-

(क)

उ०

पुस्तक चुराई जाती है।

(ग)

उ०

मीरा सुंदर लड़की है।

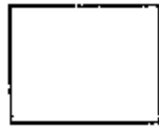
B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंक का योग

22



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 22 के अंक

कुल अंक



B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग

23

$$\square + \square = \square$$

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 23 के अंक कुल अंक



B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

24

+

=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 24 के अंक

कुल अंक

100

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग